



# आर्य सन्देश

साप्ताहिक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्यपत्र

आर्य संदेश टीवी

[www.AryaSandeshTV.com](http://www.AryaSandeshTV.com)

आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) पर आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में वर्चुअल आयोजन

**महर्षि दयानन्द के कार्यों को और अधिक शक्ति से करने के संकल्प का दिन है निर्वाण दिवस**

**अज्ञानस्त्रपी अंधकार में ज्ञान का दीपक जलाकर महर्षि दयानन्द ने मनाई थी वास्तविक दीपावली**

**आज फिर उस उजियारे पर पुनः अंधकार की चादर चढ़ती जा रही है - और बड़ी योजनाओं के साथ कार्य करने की आवश्यकता**

**मेरे परिवार में आर्यसमाज, मेरी पहचान समाज में एक आर्यसमाजी के रूप में और मेरा योगदान आर्यसमाज की उन्नति के लिए है या नहीं - ये विचारना आज जरूरी - विनय आर्य**



महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

वेदों के उद्धारक  
महान समाज सुधारक  
आर्य समाज के संस्थापक  
हमारे प्रेरणा स्रोत  
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी  
को शत-शत नमन

पटमध्यान महाशय धर्मपाल

पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में पाखंड और अंथविश्वास के विरुद्ध लंबी लड़ाई लड़के और राजनीतिक चेतना जगाकर कर भारत माता की स्वतन्त्रता का बिगुल बजा दिया और स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है का नारा दिया।

श्री कीर्ति शर्मा जी, कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा, ने अपने विचार रखते हुए कहा-



भजन सुनाए, उनका सहयोग श्री सुनील जी और श्री विशाल जी कर रहे थे। भजनों के उपरांत श्री सत्यानन्द आर्य जी, वॉइस प्रेसिडेंट एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, ने महर्षि को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा- नव विवाहित युवा और बालक-बालिकाओं ने सामूहिक यज्ञ के साथ ऋषि दयानन्द के कार्यों को करने का लिया संकल्प। आज का दिन आर्य समाज के लिए बड़ा महत्व का दिन है। सन 1883 की दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण हुआ था। 19वीं शताब्दी में इस महापुरुष ने देश में सामाजिक क्रांति, शिक्षा क्रांति, राजनीतिक चेतना के द्वारा देश को जागृत किया। हम उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। देश उस समय

आर्य बन्धुओं, बहनों, बेटियों और बेटों के साथ आर्य सन्देश टी.वी. के माध्यम से जो लाइव कार्यक्रम देख रहे हैं, उन सभी को मेरा शत-शत नमन। 19वीं शताब्दी में राष्ट्रीय - शेष पृष्ठ 5 पर

**सभा के पूर्णकालिक कार्यकर्ता - सभा की शक्ति : मिलकर बढ़ाएं आर्यसमाज के कार्यों को**

**पहली बार 90 साथियों को एक साथ देखकर मन प्रसन्न है**

- धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीपावली यज्ञ सम्पन्न

**महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर, सहयोग, मशाल, प्रचारक प्रकल्प, हवन उथान, सामान्य प्रशासन आदि सभी विभागों के साथियों ने यज्ञ में आहुति देकर महर्षि दयानन्द के कार्यों को बागे बढ़ाने का संकल्प लिया**

जी, उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, सिंह आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी, श्री कृपाल मन्त्री श्री एस.पी. सिंह जी, श्री संजय जी, अ.भा. दयानन्द सेवा श्रम संघ, महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा संस्थान, सहयोग, महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सेंटर, महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प, हवन उथान समिति इत्यादि से

सिंह जी, अ.भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ दिल्ली के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर सहित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली, अ.भा. दयानन्द सेवा श्रम संघ, महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा संस्थान, सहयोग, महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प, हवन उथान समिति इत्यादि से

- शेष पृष्ठ 5 पर



## वेद-स्वाध्याय

**शब्दार्थ - अग्नि:** = परमेश्वर हि  
 = निश्चय से भूरे: = बहुत प्रकार के  
 अमृतस्य = अमरपन के, आध्यात्मिक  
 ऐश्वर्य के दातो: = देने में ईशो = समर्थ है  
 और सुवीर्यस्य = सुदर्व वीरतासहित राय:  
 = धन के, भौतिक ऐश्वर्य के देने में ईशो  
 = समर्थ है, परन्तु सहसावन् = है  
 सर्वशक्तिमन्! बलवन्! वयम् = हम त्वा  
 = तेरी अवीरा: = वीरतारहित, कायर  
 होकर मा = मत परिषदाम = उपासना  
 करें अप्सवः = कुरुप, विकृत होकर मा  
 = मत उपासना करें और अदुवः =  
 असेवक होकर मा = मत उपासना करें।

**विनय** - हे अग्ने! हम तुम्हारी  
 बहुत-सी विफल उपासना करते हैं। तुम

## सब कुछ देने में समर्थ

ईशो ह्य ग्निरमृतस्य भूरेरीशो रायः सुवीर्यस्य दातोः।  
 मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि घदाम मादुवः ॥ ७ । ४ । ६  
 ऋषिः वसिष्ठः ॥ । देवता - अग्निः ॥ । छन्दः स्वाराट्पङ्कि ॥ ।

तो सर्वशक्तिमन् हो, हमें सब-कुछ देने सकते हैं। हमें प्रभूत अमृत, विविध प्रकार का आध्यात्मिक ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ हो, सुवीरता आदि सहित सब प्रकार का भौतिक धन देने में समर्थ हो, परन्तु हम ही हैं जो तुम्हारी आराधना करने के अयोग्य हैं, अतएव तुम सर्वदाता से भी हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते। हम कितने मूर्ख हैं कि निर्वीर्य होकर, विकारयुक्त होकर और सेवा-रहित होकर तुम्हारा भजन करना चाहते हैं! भला, हम कायर लोग, है

सहसावन्! तुम्हारी क्या उपासना कर सकते हैं? हम विकारयुक्त, मलिन हृदयों वाले तुम्हारी क्या उपासना करेंगे? हम सेवारहित स्वार्थी पुरुष तुम्हारी उपासना से क्या लाभ प्राप्त करेंगे? अतः हमने आज से निश्चय किया है कि अब हम वीर्यहीन, विकृत और असेवक होकर कभी तुम्हारी उपासना में नहीं बैठेंगे। हम सब कमजोरियों को हटाकर, निर्भय वीर होकर तुम्हारे सच्चे उपासक बनेंगे, सब काम-क्रोधादि मलिनताओं को दूर करके शुद्ध-सुरुप

बनकर तुम्हारी आराधना करने बैठेंगे और दिन-रात निरन्तर सेवा-कार्य करते हुए ही अब हम प्रातः सायं तुम्हारा भजन किया करेंगे। सचमुच तभी हम तुम्हारे पास बैठने के योग्य होंगे, तुम्हारी उपासना करने के अधिकारी बनेंगे और तभी उपासना द्वारा तुमसे अमृतत्व आदि आध्यात्मिक ऐश्वर्यों को, वीरता आदि सद्गुणों को तथा अन्य भौतिक ऐश्वर्यों को भी प्राप्त कर सकेंगे।

- : साभार :- वैदिक विनय

**वैदिक विनय :** यह प्रस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

(सम्पादकीय) जम्मू-कश्मीर में धारा 370 की वापसी के लिए गुपकार समझौता

**व** कश्मीर की घाटी और महबूबा मुफ्ती के बयान कोई नई बात नहीं है, आतंकवाद की दुकान से उनके बाप दादा ने रोटी खाई अब महबूबा भी उसी दुकान का शाटर उठाने की फिराक में दिख रही है। महबूबा मुफ्ती ने कहा है कि आज घाटी में युवाओं के पास नौकरी नहीं है, इसलिए उनके सामने हथियार उठाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। इसलिए आतंकी कैप में भी भर्तियां बढ़ने लगी हैं।

आंकड़े कहते हैं कि 29 साल का अरसा घाटी में 46000 लोगों को लील गया। इनमें 24000 आतंकी और 7000 जवान भी हैं। अगर 5 आतंकी मारे गए, तो उनके बदले में एक सुरक्षाकर्मी की जान कश्मीर में गई है। मौत का चक्र यहीं नहीं रुका। मौत का आंकड़ा दिनोंदिन अपनी रफ्तार को तेज करता गया परिणामस्वरूप आतंकियों के साथ-साथ नागरिक भी आतंकियों की गोलियों का शिकार हुए। अगर इस त्रासदी का गंभीरता से विश्लेषण करें तो पर्दे के पीछे घाटी के पांच या सात परिवार ही दिखाई देते हैं, जो आज गुपकार गैंग बनाकर बैठे हैं।

असल में समस्या क्या है? समस्या का मूल कारण क्या है? क्या वजह है जो महबूबा जैसे घाटी के नेता आतंक को जिन्दा करना चाहते हैं? क्योंकि रोशनी एकत्र या रोशनी स्केम जैसा नाम सुनकर अंदाजा लगाया जा सकता है। बहुत से लोग सोचते होंगे कि यह यह बिजली से जुड़ी कोई योजना होगी। जी नहीं! जम्मू कश्मीर में यह अंधेरगार्दी से जुड़े एक घोटाले का नाम है। जो रियल एस्टेट सेक्टर में सरकारी स्तर पर अरबों रुपये के घपले को अंजाम देने के लिए यह एकत्र लाया गया था। इस भूमि घोटाले के तहत हुए तमाम आवंटन और प्रक्रियाएं निरस्त कर दी गई हैं और हाई कोर्ट ने इसे पूरी तरह गैर कानूनी और असंवैधानिक करार दे दिया है।

जम्मू कश्मीर के इतिहास में 25,000 करोड़ रुपये के सबसे बड़े घोटाले के तौर पर देखे जा रहे इस एकत्र को सिरे से खारिज कर दिए हैं। इस कारण इनके पेट में मरोड़ हैं। फारुक अब्दुल्ला सरकार द्वारा 2001 में लाई गई इस स्कीम के तहत 1990 से हुए अतिक्रमणों को इस एकत्र के दायरे में कट ऑफ सेट किया गया था। अंधेरे ये थे कि जमीन को मार्केट वैल्यू के सिर्फ 20 फीसदी दर पर सरकार ने कब्जेदारों को सौंपा। यानी कुल मिलाकर इससे 25 हजार करोड़ रुपये का घोटाला होने की बात सामने आई। अंधेरे ये भी रहा कि अब्दुल्ला सरकार के बाद की सरकारों ने भी इसका फायदा उठाया। चाहे गुलाम नबी की सरकार रही हो या मुफ्ती की। हर उस व्यक्ति को फायदा पहुंचा। मंत्रियों, कारोबारियों, नौकरशाहों और इन सबके रिश्तेदारों या करीबियों को जमीनें कौड़ियों के भाव मिलीं। हसीब दरबू, मेहबूब बेग, मुश्तक अहमद चाया, शन अमला, खुशीद अहमद गनी और तनवीर जहान जैसे प्रभावशाली नाम इस लिस्ट में सामने आ चुके हैं।

इस घोटाले की गहराई की अंदाजा इस बात से लगाई एक श्रीनगर शहर के बीचों बीच खीदमत ट्रस्ट के नाम से कांग्रेस के पास कीमती जमीन का मालिकाना हक पहुंचा, तो नेशनल कॉन्फ्रेंस का भव्य मुख्यालय तक ऐसी ही जमीन पर बना हुआ है, जो इस भूमि घोटाले से तकरीबन मुफ्त के दाम हथियाई गई।

यानि गैरकानूनी कानून बनाकर कैसे करोड़ों के वारे न्यारे किए जाते हैं, इसकी मिसाल बनी रोशनी स्कीम से जम्मू कश्मीर की कई सरकारों ने जेबे भर्ती। कांग्रेस, एनसी, पीडीपी की जो भव्य इमारतें खड़ी हैं, अब उनके नीचे से जमीन खिसक चुकी हैं?

आखिर ऐसा क्या हुआ जो नजरबंदी हटते ही कश्मीर के सभी दल एक जगह गुपकार घोषणापत्र को लेकर खड़े हो गये? इसका भी जवाब एक साल पीछे मिलेगा।

## घाटी को फिर से सुलगाने की कोशिश

..... धारा 370 कश्मीर में एक अनुच्छेद ही नहीं बल्कि रोजगार का एक बड़ा साधन भी था। हमेशा धारा 370 की आड़ में वहां आतंकवाद बढ़ता चला गया, लोगों को बरगलाया गया। परिणाम यह रहा कि वहां की जनता को गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिला। देशभर के बाकी राज्यों में आतंकवाद क्यों नहीं पनपा क्योंकि वहां 370 नहीं थीं जो अलगाववाद का मूल पैदा करती रही थीं। दिल्ली हमेशा श्रीनगर को पैसा भेजती रही लेकिन श्रीनगर से दिल्ली को हमेशा जवानों के पार्थिव शरीर और धमकियां ही मिलती रहीं। अब जब पिछले वर्ष दिल्ली और श्रीनगर के बीच की दीवार 370 गिर गयी तो ये लोग अब दुबारा उसी दीवार की चाह में साझा घोषणापत्र जारी कर रहे हैं। आतंक को फिर से पैदा करने की कोशिश की जा रही है। घाटी में सत्तारूढ़ पाटी बीजेपी से जुड़े नेताओं की हत्या तक की जा रही है। लोगों में खौफ पैदा कर राज्य को फिर से मजहबी आग में झोकना चाह रहे हैं।.....



क्योंकि अधीर रंजन चौधरी के सवाल पर जवाब देते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में कहा था कि कश्मीर के तीन परिवारों ने कश्मीर को जमकर लूटा पूरे देश को पता है कि वो तीन परिवार कौन हैं। जन कल्याण का जो पैसा केंद्र से राज्य में भेजा गया उससे जनता का पूरा विकास नहीं हुआ। क्योंकि 370 की वजह से भ्रष्टाचार चलता रहा। यह पैसा कहां गया, इसी 370 को ढाल बनाकर भ्रष्टाचार करने का काम वहां के नेताओं ने किया है।

असल में धारा 370 कश्मीर में एक अनुच्छेद ही नहीं बल्कि रोजगार का एक बड़ा साधन भी था। हमेशा धारा 370 की आड़ में वहां आतंकवाद बढ़ता चला गया, लोगों को बरगलाया गया। परिणाम यह रहा कि वहां की जनता को गरीबी के अलावा कुछ नहीं मिला। देशभर के बाकी राज्यों में आतंकवाद क्यों नहीं पनपा क्योंकि वहां 370 नहीं थीं जो अलगाववाद का मूल पैदा करती रही थीं। दिल्ली हमेशा श्रीनगर को पैसा भेजती रही लेकिन श्रीनगर से दिल्ली को हमेशा जवानों के पार्थिव शरीर और धमकियां ही मिलती रहीं। अब जब पिछले वर्ष दिल्ली और श्रीनगर के बीच की दीवार 370 गिर गयी तो ये लोग अब दुबारा उसी दीवार की चाह में साझा घोषणापत्र जारी कर रहे हैं। आतंक को फिर से पैदा करने की कोशिश की जा रही है। घाटी में सत्तारूढ़ पाटी बीजेपी से जुड़े नेताओं की हत्या तक की जा रही है। लोगों में खौफ पैदा कर राज्य को फिर से मजहबी आग में झोकना चाह रहे हैं।

कभी एक दूसरे के धुरियारोधी रहे ये आज सभी दलों के नेताओं को न तो जम्मू-कश्मीर की चिंता है और न ही 370 की। बल्कि अब ये लोग केन्द्रीय शासन में खुलने वाली फाइलों से परेशान हैं। उपराज्यपाल आते ही वहां ठंड में पसीने आने लगे हैं और अब फाइलें खुल रही हैं। परिणाम भी दिख रहा है अलगाववादी नेता सैयद अली शाह

महात्मा गांधी की दोहरी नीति के विषय में उनके पौत्र का ट्वीट

**मा**

हन दास कर्मचंद गांधी जी एक बार फिर से चर्चा का विषय बन गये हैं। इस बार इस महान अखंड ब्रह्मचारी पर सवाल उठाने वाले कोई और नहीं बल्कि उन्हें के पड़पोते तुषार गांधी है। तुषार गांधी ने कई दिन पहले एक ट्वीट करके कहा कि गांधी जी हमेशा सही नहीं होते थे। उन्होंने जिस तरह अपने बेटे मणिलाल के एक मुस्लिम लड़की से प्रेम विवाह पर रोक लगाई, उस मामले में वो गलत थे।

तुषार गांधी का ट्वीट इस बात की गवाही दे रहा है कि गांधीजी देश में तो मुस्लिमों को बसाना चाहते थे लेकिन अपने घर में नहीं! क्या गांधी जी इस देश को अपना घर नहीं मानता थे क्योंकि जब उनका बेटा मणिलाल मुस्लिम लड़की फातिमा से शादी करना चाहता था तो गांधी जी ने साफ मना कर दिया था की हम घर में नहीं घुसने देंगे। इससे मणिलाल काफी नाराज भी हुआ था।

अब यहाँ से गांधी जी का दोहरा चरित्र समझिये। जिन्ना ने खुद मुस्लिम होने के बावजूद मुस्लिम लड़की से शादी नहीं की थी, जिन्ना ने एक पारसी लड़की रतनबाई उर्फ रुटी से व्याह रखाया था। तब गांधी जी ने कोई विरोध नहीं किया। लियाकत अली खान ने प्रतिष्ठित कुमायुनी ब्राह्मण परिवार की लड़की शीला ईरीन पंत से लव जिहाद किया गांधी जी खामोश रहे। बल्कि चार जून, 1931 को 'यंग इंडिया' में गांधी लिखते हैं अपने धर्म से बाहर व्याह करने का सवाल जुदा है। इसमें जब तक स्त्री-पुरुष में से हरेक को अपने-अपने धर्म का पालन करने की छूट होती है, तब तक नैतिक दृष्टि से मैं

#### प्रेरक प्रसंग

#### महापुरुषों की रीति

सार्वदेशिक सभा की बैठक थी। महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज प्रधान थे। पण्डित चमूपतिजी महाराज उठकर कुछ बोले। महात्माजी आवेश में थे। बोले—“बैठ जाओ, तुम्हें कुछ पता नहीं।”

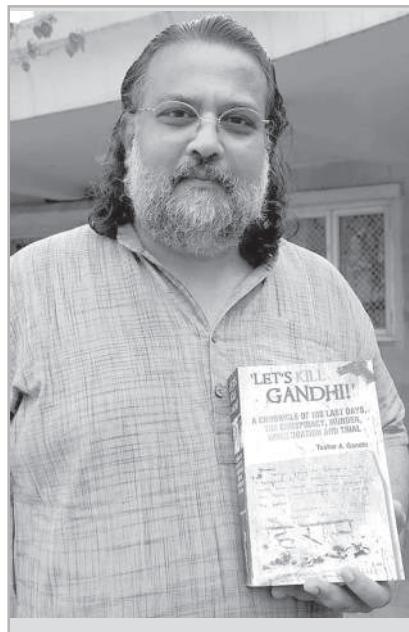
आचार्य प्रवर पण्डित चमूपति चुपचाप बैठ गये। बैठक समाप्त हुई। महात्माजी एक ऊँचे साधक थे। उनके मन में विचार आया कि उनसे कितनी भयंकर भूल हुई है। आचार्य चमूपति सरीखे अद्वितीय मेधावी विद्वान् को यह क्या कह दिया?

महात्माजी आचार्यजी के पास गये। नम्रता से कहा, “पण्डितजी मुझसे बड़ी भूल हुई। मैं आवेश में था। सभा-संचालन में कई बार ऐसा हो ही जाता है। मैंने आवेश में आकर कह दिया—‘तुम्हें कुछ पता नहीं या तुम्हें क्या आता है।’”

आचार्य प्रवर चमूपति बोले, “ऐसी कोई बात नहीं, आपने ठीक ही कहा।

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

## गांधी जी पर गांधी के पोते के सवाल



ऐसे विवाह में कोई आपत्ति नहीं समझता। परंतु मैं नहीं मानता कि ऐसे विवाह संबंधों के फलस्वरूप शांति कायम होगी।

इसी बीच एक दिलचस्प घटना घटी और गांधी का चरित्र फिर उगाजर हो गया। 1933 में गांधी के अपने ही दो निकट के परिचितों के अंतर्जातीय विवाह का प्रश्न सामने आ गया। पुरुष भारतीय हिंदू था और महिला जर्मनी की एक रोमन कैथोलिक ईसाई थीं। पत्नी अपने बच्चों की परवरिश रोमन-कैथोलिक संस्कृति के आधार पर करना चाहती थी। जब इस बारे में गांधीजी की राय पूछी गई तो उन्होंने 16 नवंबर, 1933 को एक पत्र में लिखा ‘मेरा विश्वास है कि जब पति और पत्नी भिन्न मतों के मानने वाले हों, तो उनकी संतान को पिता के धार्मिक संस्कारों के अनुसार पाला जाना चाहिए। इस बात के पक्ष में मेरी राय में ठोस धार्मिक और दार्शनिक कारण के चलते पिता का धर्म ही संतान को मानना चाहिए।

तब गांधी जी जवाब देते हुए लिखते हैं फीरोज गांधी का नेहरू परिवार के साथ बरसों पुराना घराना है। कमला नेहरू की बीमारी में श्री फीरोज गांधी ने उनकी तीमारदारी की थी। वे उनके लिए पुत्रवत् यानि बेटे जैसे थे। यूरोप में इंदिरा की बीमारी के बक्त भी उनकी बड़ी मदद रही थी। यहाँ से दोनों में स्वाभाविक मित्रता पैदा हुई। यह मित्रता संयमवाली रही। इसमें से आपसी चाह पैदा हुई। मगर दोनों में से किसी ने यह नहीं चाहा कि वे जवाहरलाल नेहरू की सम्मति और आशीर्वाद के बिना विवाह कर लें। जब जवाहरलाल को विश्वास हो गया कि इस आकर्षण की तह में स्थिरता है, तभी उन्होंने अपनी स्वीकृति दी। लोग जानते हैं कि नेहरू-परिवार के साथ मेरा कितना घनिष्ठ संबंध है। मैंने दोनों पक्षों से बातचीत भी की। अगर इस सगाई पर सहमति न व्यक्त की जाती, तो यह क्रूरता होती।

यानि अपने बेटे के साथ क्रूरता कर दी पर नेहरू जी की बेटी के साथ नहीं की, कमाल के थे देश के बापू, असल में गांधी की दोहरी जबान और ये दोहरा चरित्र उजागर किया है महात्मा गांधी की पड़पोती उमा धूपेलिया ने। उमा ने साल 2006 में मणिलाल गांधी की जीवनी ‘मणिलाल गांधी गांधीजी प्रीसनर?’ नाम से लिखी थी। उमा वेस्टर्न कैप यूनिवर्सिटी, साउथ अफ्रीका में हिस्ट्री की प्रोफेसर हैं। इनकी एक बेटी सपना है जो इन दिनों दक्षिण अफ्रीका के शहर केपटाउन में भारतवंशियों पर एक किताब पर काम

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

..... मणिलाल को भरोसा था कि वो टिमी उर्फ फातिमा से शादी कर लेंगे। हालांकि उन्हें धीरे-धीरे लगने लगा कि इसमें कई बाधाएँ थीं। कस्तूरबा दूसरे धर्म में शादी की सख्त विरोधी थीं। धर्म क्या वो तो दूसरी जाति में भी विवाह के पक्ष में नहीं थीं। वह ये बात कर्तव्य पचा नहीं सकती थीं कि उनकी बहू दूसरे धर्म और जाति की हो। खैर मणिलाल ने 1926 में अपने से छोटे भाई रामदास के जरिए पिता को संदेश भेजा कि वो फातिमा से शादी करना चाहते हैं। फातिमा ही नहीं उसके भाई बहन और परिवार का गांधीजी के परिवार से दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान बहुत आत्मीय रिश्ता था। लिहाजा मणि को उमीद थी कि पिता मान जाएंगे, लेकिन पिता ने जवाबी तौर पर जो पत्र भेजा, वो किसी धमाके से कम नहीं था। गांधीजी ने लिखा ‘ये अर्थम होगा’। .....

कर रही हैं।

दरअसल गांधीजी अपने जीवन में लंबे समय तक ना केवल अंतर धार्मिक बल्कि अंतर जातीय विवाह के भी खिलाफ थे। उन्होंने अगर अपने दूसरे बेटे मणिलाल को एक मुस्लिम लड़की से प्रेम विवाह करने से रोका तो सबसे छोटे बेटे देवदास की भी अंतर जातीय शादी कई साल के लिए ये सोचकर रोक दी थी, तब तक उनके दिमाग से प्रेम विवाह की जिद उत्तर जाएगी।

खैर! इन की दूसरी संतान मणिलाल

को एक मुस्लिम लड़की से प्यार हो गया। दोनों का प्रेम करीब एक दशक तक चला। इस लड़की से शादी करना चाहते थे। जब उन्होंने गांधीजी से अनुमति मांगी तो उन्होंने कई तर्क देते हुए इस शादी से साफ मना कर दिया। मणिलाल को गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका में विश्वस्त सहयोगी युसुफ गुल की बेटी फातिमा से प्यार हो गया था। वे लोग बचपन से साथ रहे थे। काफी समय साथ गुजरता था, लिहाजा समय के साथ करीब आ गए। चूंकि बचपन से ही गांधीजी ने अपने बेटों को सिखाया था कि सभी धर्म समान हैं, हमें घुलमिलकर रहना चाहिए, लिहाजा बच्चों के दिमाग में कभी आया ही नहीं कि धर्म भी एक दोवार हो सकती है।

लेकिन मणिलाल को भरोसा था कि वो टिमी उर्फ फातिमा से शादी कर लेंगे। हालांकि उन्हें धीरे-धीरे लगने लगा कि इसमें कई बाधाएँ थीं। कस्तूरबा दूसरे धर्म में शादी की सख्त विरोधी थीं। धर्म क्या वो तो दूसरी जाति में भी विवाह के पक्ष में नहीं थीं। वह ये बात कर्तव्य पचा नहीं सकती थीं कि उनकी बहू दूसरे धर्म और जाति की हो। खैर मणिलाल ने 1926 में अपने से छोटे भाई रामदास के जरिए पिता को संदेश भेजा कि वो फातिमा से शादी करना चाहते हैं। फातिमा ही नहीं उसके भाई बहन और परिवार का गांधीजी के परिवार से दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान बहुत आत्मीय रिश्ता था। लिहाजा मणि को उमीद थी कि पिता मान जाएंगे, लेकिन पिता ने जवाबी तौर पर जो पत्र भेजा, वो किसी धमाके से कम नहीं था।

गांधीजी ने लिखा ‘ये अर्थम होगा’।

पत्र ने मणि के सारे सपने को ध्वस्त कर दिया। उसमें लिखा, अगर तुम हिंदू हो और तुमने फातिमा से शादी करना चाहते हैं। फातिमा ही नहीं उसके भाई बहन और परिवार का गांधीजी के परिवार से दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान बहुत आत्मीय रिश्ता था। लिहाजा मणि को उमीद थी कि पिता मान जाएंगे, लेकिन पिता ने जवाबी तौर पर जो पत्र भेजा, वो किसी धमाके से कम नहीं था।

गांधीजी ने लिखा ‘ये अर्थम होगा’।

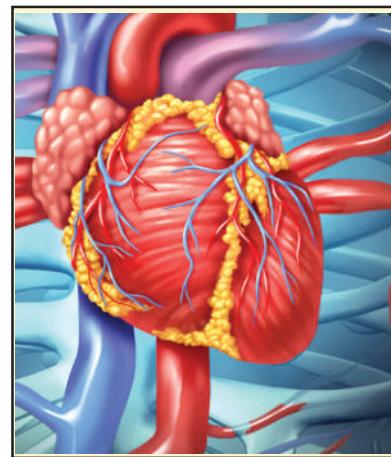
पत्र ने मणि के सारे सपने को ध्वस्त कर दिया। उसमें लिखा, अगर तुम हिंदू हो और तुमने फातिमा से शादी करना चाहते हैं। फातिमा ही नहीं उसके भाई बहन और परिवार का गांधीजी के परिवार से दक्षिण अफ्रीका में रहने के दौरान बहुत आत्मीय रिश्ता था। ल

## (स्वास्थ्य रक्षा)

हमारे शरीर में रक्तवाहिनी धमनियों में जो रक्त प्रवाह होता है, उस प्रवाह को गति हृदय से प्राप्त होती है। जो कि दिन-रात लगातार एक अनवरत पम्पिंग मशीन की भाँति रक्त को पम्प करता रहता है। हृदय द्वारा उत्पन्न दबाव से रक्त धमनियों में पहुंचता है और शरीर के विभिन्न भागों को शक्ति देकर पुनः हृदय के पास लौट आता है। इस वापिस आए रक्त को हृदय अपनी विधि द्वारा शुद्ध करके पुनः शरीर में भेज देता है। इस तरह यह रक्त के आवागमन की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। रक्त पर हृदय की पम्पिंग का जो दबाव पड़ता है उसे रक्तचाप कहते हैं।

सामान्य रक्तचाप एक स्वाभाविक क्रिया है लेकिन जब यह यह क्रिया असामान्य हो जाती है तब रोग बन जाता है। जब किन्हीं कारणों से यह दबाव बढ़ता है तो उसे उच्चरक्तचाप कहते हैं, तथा जब दबाव कम हो जाता है तब इसे निम्न रक्तचाप कहते हैं।

जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे डायस्टोलिक प्रेशर या अनुशिथिलन रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप  $80/50$ , युवकों का  $120/70$  तथा प्रोडों का  $140/90$  होना सामान्य माना जाता है।



..... जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक रक्तचाप या प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोलिक प्रेशर या अनुशिथिलन रक्तचाप कहते हैं। इन क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप  $80/50$ , युवकों का  $120/70$  तथा प्रोडों का  $140/90$  होना सामान्य माना जाता है। ....

प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोलिक प्रेशर या अनुशिथिलन रक्तचाप कहते हैं। इन क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप  $80/50$ , युवकों का  $120/70$  तथा प्रोडों का  $140/90$  होना सामान्य माना जाता है। इनमें पहली बड़ी संख्या सिस्टोलिक प्रेशर तथा दूसरी छोटी संख्या डायस्टोलिक प्रेशर की सूचक है।

उच्चरक्तचाप का रोग एकदम नहीं होता। यह धीरे-धीरे आता है और कई

तरह की पूर्व सूचना देकर आता है। उच्चरक्तचाप होने पर कुछ सामान्य लक्षण जैसे-सिरदर्द, सिर भारी रहना, सिर में चक्कर आना, शरीर में थकान महसूस होना, स्वभाव चिड़चिड़ा होना, किसी काम में मन न लगना, अनिद्रा, चढ़ने में सांस फूल जाना इत्यादि। उच्चरक्तचाप का यदि समय पर उपचार न किया जाए तो हार्ट अटैक, गुर्दों का रोग, लकवा तथा आंखों के कई रोग हो जाते हैं।

उच्चरक्तचाप को नियन्त्रण में लाने के लिए अधिक नमक, मिर्च-मसाले, अधिक चीनी, वसा तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन, सिगरेट कॉफी तथा शराब का

सेवन न करें। लगातार मानसिक चिन्ता, शोक, क्रोध, मोटापा, मधुमेह का रोग, गुर्दों द्वारा अपना कार्य भली भाँति न करने के कारण उच्चरक्तचाप के रोग उग्ररूप धारण कर लेते हैं।

पोटैशियम युक्त भोजन, मलाई उतारा हुआ दूध, सादा दही तथा संतरे का जूस, टमाटर, पालक, केला प्रतिदिन लेने से उच्चरक्तचाप सामान्य हो जाता है।

निम्न रक्तचाप-के कई कारण हो सकते हैं, परन्तु इसको मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जाता है-

पैषिक आहार की कमी के कारण, लम्बे समय तक बीमार पड़े रहने, हृदय की किसी बीमारी तथा क्षय रोग के कारण लाक्षणिक निम्न रक्तचाप हो जाता है।

जब तक व्यक्ति बिस्तर में लेटा रहता है, उसका रक्तचाप ठीक रहता है पर ज्यों ही वह बिस्तर से उठता है तो उसे निम्नरक्तचाप हो जाता है। इसलिए इसे राइजिंग का नाम दिया जाता है। यह विशेषकर शारीरिक तौर पर कमज़ोर तथा पतली औरतों को होता है, उठने पर उन्हें चक्कर आने लगते हैं। पतले लम्बे व्यक्तियों जिनको भूख कम लगती है, जिनके भोजन में प्रोटीन तत्व बहुत कम होते हैं, कब्ज वाले रोगियों तथा रक्तहीनता वाले रोगियों को भी यह रोग हो जाता है।

- शेष अगले अंक में

## (बाल बोध)

## गतांक से आगे -

जैसे पावर हाऊस में विद्युत का एक केन्द्र होता है। वहां से बिजली अनेक स्थानों में जाती है और फिर विद्युत से सब यन्त्र कार्य करने लगते हैं। वैसे ही प्राणायाम करने से ऊर्जा ऊपर की ओर उठती है। जिससे समर्थता आती है। अगर कोई व्यक्ति साहित्य, संगीत, कला या किसी भी क्षेत्र में विशेष कार्य करना चाहता है, तो उसे भ्रामी प्राणायाम से सभी कार्यों में सफलता मिलती है।

**नाड़ीशोधन प्राणायाम :** लोम-विलोम प्राणायाम अर्थात् नाड़ीशोधन की प्रक्रिया। नासिका के दोनों छिद्रों से श्वासों का आवागमन होता है। लेकिन एक समय में एक ही छिद्र से श्वास आता और जाता है। एक घण्टा दस मिनट तक एक छिद्र से श्वास आता है, फिर दूसरे छिद्र से आता है। दाएं छिद्र से आने वाले श्वास को सूर्य श्वास कहते हैं और बाएं को चन्द्र श्वास कहा जाता है। इसी तरह मस्तिष्क भी दो भागों में विभक्त है, दायां और बायां। जिसका दाया भाग जागृत है, वह अर्टिस्ट होगा, कलाकार अच्छा होगा। लेकिन कल्पना ज्यादा करेगा, स्वप्न देखेगा और कर्मठता से दूर रहेगा। ऐसे लोग हिंसाब-किताब में भी कमज़ोर होते हैं। उनकी दिमागी हालत भी ज्यादा सुदृढ़ नहीं होती। अगर कोई लाजिक बात करे तो उनको समझ नहीं आती। इसके विपरीत जिनका बायां मस्तिष्क जागृत है, वे कर्मशील होते हैं। ऐसा व्यक्ति स्वप्न न देखकर कर्म करने में विश्वास रखता है। भक्ति के कार्यों में भी वह सेवा की जिम्मेदारी निभाता है। लाजिक बातों को



.... विद्यार्थी जीवन में कपालभाति प्राणायाम बहुत उपयोगी है। इससे डिप्रेसन और तनाव दूर होता है। कोशिकाएं और सैल्स ताजा रहते हैं। इस प्राणायाम को करने की विधि इस प्रकार है- अपने आसन पर बैठकर श्वास को बाहर फेंकना है। जब श्वास बाहर फेंकोगे तो स्वयं अन्दर आएगा। आप बाहर फेंकते रहिए रहिए, श्वास अन्दर आने दीजिए। यह क्रिया थोड़ी देर तक करते रहिए। यूं तो कपालभाती प्राणायाम तीन सौ बार भी किया जा सकता है। लेकिन आप प्रारंभ में केवल तीन मिनट ही कीजिए। तीन बार कीजिए और फिर निरन्तर अभ्यास करें तो धीरे-धीरे आगे बढ़ाते जाईए।.....

समझकर, क्रियान्वित करने का सफल प्रयास करेगा। इसलिए एक समय में एक ही छिद्र से श्वास आता और जाता है। दोनों को सजग होना जरूरी है।

**लोम-विलोम प्राणायाम :** लोम-विलोम प्राणायाम करने से पूर्व यह देख लेना चाहिए कि अगर चन्द्र श्वास चल रहा है, तो आप दाएं छिद्र में श्वास भरकर बाएं छिद्र से बाहर निकालिए।

श्वास भरकर दाएं छिद्र को बंद करने पर ही बाएं छिद्र से श्वास बाहर निकलेगा। यह प्रक्रिया दस बार कीजिए। इसके बाद शांत होकर बैठिए। पुनः इसके विपरीत क्रिया करें। बाएं छिद्र से श्वास भरकर दाएं से बाहर निकालिए। यह प्रक्रिया भी दस बार कीजिए।

लोम-विलोम प्राणायाम को नाड़ी शोधन क्रिया कहते हैं। क्योंकि रीढ़ की हड्डी में जो सुषुमा नाड़ी है, वह इस प्राणायाम से शुद्ध होती है। दोनों मस्तिष्क जागृत होते हैं। बुद्धि तीव्र होती है और इंसान सफलता प्राप्त करता है।

**भस्त्रिका प्राणायाम :** नाड़ी शोधन करने के बाद भस्त्रिका प्राणायाम कीजिए। जैसे लोहार धौंकनी चलता है। हवा भरता है और छोड़ता है। वैसे ही फेफड़ों में श्वास भरिए, फिर छोड़ दीजिए। श्वास भरिए, छोड़ दीजिए। ऐसा थोड़ी देर करने के बाद विश्राम की स्थिति में आ जाइए। शांत होकर मस्तिष्क के मध्य भाग में ध्यान टिकाइए। ध्यान मस्तिष्क पर रहे और क्रिया चलती रहे। क्योंकि कोई भी क्रिया तभी सफल होती है जब उसमें मन का भी योग हो। मन तभी लगता है जब ध्यान हमारा मस्तिष्क के मध्य भाग में लगा हो। भस्त्रिका प्राणायाम से हमारा तीसरा मस्तिष्क जागृत होता है। तीसरी मस्तिष्क सिर के पिछले हिस्से में होता है। इस प्राणायाम से तीनों मस्तिष्क एक साथ वाइक्रेट हो जाएंगे।

**कपालभाती प्राणायाम :** चौथा प्राणायाम कपालभाती है। विद्यार्थी जीवन में यह बहुत उपयोगी है। इससे डिप्रेसन और तनाव दूर होता है। कोशिकाएं और

सैल्स ताजा रहते हैं। इस प्राणायाम को करने की विधि इस प्रकार है- अपने आसन पर बैठकर श्वास को बाहर फेंकना है।

जब श्वास बाहर फेंकोगे तो स्वयं अन्दर आएगा। आप बाहर फेंकते रहिए, श्वास अन्दर आने दीजिए। यह क्रिया थोड़ी देर तक करते रहिए। यूं तो कपालभाती प्राणायाम तीन सौ बार भी किया जा सकता है।

लेकिन आप प्रारंभ में केवल तीन मिनट? ही कीजिए। तीन बार कीजिए और फिर निरन्तर अभ्यास करें तो धी

प्रथम प्रष्ठ का शेष

137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस .....

दीपावली का दिन आर्यों का सबसे बड़ा प्रेरणा पर्व – सत्यानन्द आर्य

चिंतन देने वाले महर्षि देव दयानंद थे। उस राष्ट्रीय चिंतन के चार मुख्य स्तंभ थे, एक था स्वराज्य, दूसरा स्वदेशी, तीसरा स्वभाषा और चौथा स्तंभ सामाजिक क्षमता थी। आज आर्थिक चिन्तन, राजनीतिक चिंतन और सामाजिक चिंतन की जरूरत है। महर्षि के बताए रास्ते पर चलकर ही स्वराज्य मिला और उनके अनुसार ही रामराज्य मिलेगा। श्री अजय सहगल जी, उपप्रधान आर्य केंद्रीय सभा, ने अपने

वे सारा जीवन जहर पीते रहे और पत्थर खाते रहे तथा बदले में संसार को सीधा, सरल और सच्चा मार्ग बताते रहे। ऐसे ऋषिवर को शत-शत नमन। श्री जोगिंदर खट्टर जी, मंत्री आर्य केंद्रीय सभा और महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम ने बहुत ही प्रेरणादायक विचार रखते हुए कहा- मंच पर उपस्थित विद्ववत्गण, अधिकारी गण, हमारे कार्यकर्ताओं की टीम और यज्ञ में सम्मिलित होने वाले

वर्तमान में घट रही सामाजिक घटनाओं के चलते बार-बार याद आती है ऋषिवर दयानन्द की - कीर्ति शर्मा

कार्य किया, मेरे विचार में ऐसा समाज सुधारक भी कभी पैदा नहीं होने वाला। ऐसे महान् ऋषि को शत-शत नमन।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कोरोना काल में इस भव्य आयोजन के लिए आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली प्रदेश के सभी अधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि हमारे बीच में जो छात्र-छात्राएं बैठे हैं, और आर्य परिवारों के नौजवान बैठे हैं, आज इस यज्ञ को करने के लिए, वे बड़े

शास्त्री जी के नेतृत्व में एक सौ यज्ञिकों ने बहुत सुंदर यज्ञ किया। श्री नरेंद्र गांधी जी, श्रीमती शिखा व श्री प्रणव आर्य, श्रीमती अंजलि एवं श्री संजीव आर्य, श्रीमती शारदा कत्याल, प्रधाना आर्य समाज माडल टाउन, श्रीमती हिना व श्री विभु आर्य, श्रीमती अंजू आर्य, श्रीमती राजश्री एवं श्री बहस्पति आर्य, महामंत्री आर्यवीरदल, तथा आ.आर्ष आर्य मुख्य यजमान थे। यज्ञ के उपरांत वैदिक विद्वान डॉ. कमलदीप शास्त्री जी ने अपना उद्बोध



137वें निर्वाण दिवस के अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते सर्वश्री सत्यानन्द आर्य जी, कीर्ति शर्मा जी, अजय सहगल जी, जोगेन्द्र खट्टर जी एवं श्री सतीश आर्य जी



137वें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के सुसज्जित मंच से भजन प्रस्तुत करती सुश्री संजलि आर्या जी ।

13 नवम्बर 2021

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि  
मेरा सम्बन्ध ऋषि के जन्म स्थान से है  
और आज उनका निर्वाण उत्सव है। ऋषि  
को शिवरात्रि के दिन आत्मबोध और  
सत्य बोध हुआ और वे सच्चे शिव की  
खोज में निकल पड़े और मुड़कर फिर  
घर नहीं देखा। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म,  
संस्कृति, वेदोद्धार, मानवोद्धार और  
कल्याण के लिए समर्पित किया। अपने  
लिए कुछ न चाहा, न मांगा, न कोई संग्रह  
किया, न कोई चेला न कोई चेली बनाई।  
ऋषि ने न कोई पंथ व सम्प्रदाय चलाया।

सभी यज्ञप्रेमी, गुरुकुल के छात्र -छात्राएं  
और हमारे बहनों और भाईयों, आज हम  
लोग महर्षि दयानंद के 137वें निर्वाण उत्सव  
पर एकत्रित हुए हैं। महर्षि दयानंद के  
बारे में आप सभी ने इतिहास में बहुत  
कुछ पढ़ा। लेकिन न तो ऐसा कोई ऋषिवर  
हुआ, न तो ऐसा कोई संन्यासी हुआ और  
न ही आने वाले समय में होने की कोई  
सम्भावना है। कम से कम अब तो आने  
वाला समय ऐसा है नहीं कि इस प्रकार  
का कोई तपस्वी पैदा हो जाए। महर्षि  
दयानंद सरस्वती ने समाज सुधार का जो

सौभाग्यशाली हैं कि इस अवसर पर यज्ञ में उनको भी भाग लेने का सौभाग्य मिला। बंधुओं आज हमारे आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान और हमारे संरक्षक महाशय धर्मपाल जी उपस्थित नहीं हुए, मैं उनकी ओर से उनका आशीर्वाद आप सभी को देता हूँ, वे चाहते थे कि कार्यक्रम अवश्य हो, इसका प्रसारण देश-दुनिया में होता रहे। मैं उनकी ओर से दीपावली की शुभकामनाएं भी देता हूँ। श्री विनय आर्य जी ने इस अवसर पर यज्ञ के उपरांत विशेष उद्बोधन देते हुए ऋषि दयानन्द जी को नमन करते कहा कि ऋषि के अधूरे कार्यों को पूरा करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। ऋषि ने अपने हत्यारे को भी अभ्यदान दिया था और उनकी प्रेरणा से आर्य समाज के इतिहास को यदि चार भागों में बांटकर देखा जाए तो पता चलता है कि ऋषि निर्वाण के बाद उनसे प्रेरणा लेने वाले

तन दिया ।  
 श्री विनय आर्य जी ने अपने प्रेरणादायक विचार रखें तथा महर्षि देव दयानंद जी के अंतिम समय में प्रेरणादायक कार्य का विस्तृत वर्णन किया शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ । यह कार्यक्रम आर्य संदेश पर प्रसारित किया गया इसका संयोजन महामंत्री आर्य सतीश चड्हा ने किया । कार्यक्रम में उपस्थित श्री योगेश आर्य जी, श्री सुरिन्द्र चौधरी जी तथा श्री जितेंद्र बनाती जी ने संयोजन में सहयोग दिया । इस कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में सर्वश्री धर्मवीर, शैल कुमार, विकास, महेश, राजवीर, मोहित, लक्ष्य, सत्यप्रिय, गोपी एवं सोनू ने विशेष सहयोग दिया । महाशय धर्मपाल मीडिया सेंटर की पूरी टीम ने इस कार्यक्रम को लाइव दिखाने में पूरा सहयोग दिया । मैं सभा के सभी अधिकारियों, सहयोगियों, कार्यकर्ताओं, संवर्धकों और मीडिया टीम का हार्दिक धन्यवाद करता हूं ।

- सतीश आर्य, महामन्त्री,  
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

## पथम पञ्च का शेष

**सभा कार्यालय से महर्षि दयानिधि**

ગંબંધિત કર્યાક્રમની જાહિશન શે ।

सबावत कायकता उपस्थित थ।  
कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ से हुआ।  
यज्ञ में जहाँ एक तरफ समस्त कार्यकर्ताओं  
अधिकारियों ने अपने आहुतियाँ दीं, वही  
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्बर्धक  
श्री दिनेश आर्य जी, शिवा शास्त्री जी  
और श्री धनंजय शास्त्री जी ने विधिवत  
यज्ञ कराया। इस अवसर पर  
भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य जी ने महर्षि  
दयानंद के उपकारों को याद करते हुए  
मधुर भजन प्रस्तुत किए। उपस्थित सभी  
महानुभावों ने भजनों के माध्यम से महर्षि  
दयानंद सरस्वती जी की महिमा और  
प्रेरणाओं का गुणगान किया। इसके उपरांत  
सभा के मदामंत्री श्री तिनय आर्य जी ने

सभी विभागों के प्रबंधकों, कार्यकर्ताओं का परिचय देते हुए सभी को मंगलमय शुभकामनाएं दी। साथ ही दीपावली का उपहार देने हेतु सभा के प्रधान, कोषाध्यक्ष, उप प्रधान, महामंत्री एवं मंत्री उपस्थित रहे। सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के लोक उपकारी कार्यों को स्मरण करते हुए सभी को उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। प्रेम सौहार्द के वातावरण में प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भोजनोपरान्त एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हुए अपने अपने घरों की ओर प्रस्थान किया।

सांय 5.25 यज्ञ ब्रह्मा श्री शिवा

संग्रह वाचन

खेद व्यक्ति  
खेद है कि प्रैस गड़बड़ी होने के कारण  
आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 1 वर्ष 44  
दिनांक 16 नवम्बर से 22 नवम्बर, 2020  
प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा  
के लिए खेद है। - सम्पादक

गतांक से आगे -

## विकलांगता

प्रत्येक युवा मन की यह इच्छा होती है कि मैं सब से आगे बढ़ जाऊं। परन्तु जब कोई विकलांग युवा हिम्मत कर आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है तो दूसरे लोग उसका उपहास करने लगते हैं। परन्तु साहस और पुरुषार्थी व्यक्ति विकलांग होते हुये भी अनेक क्षेत्रों में आगे बढ़ जाता है। विकलांग लोगों ने एवरेस्ट की चोटी पर भी अपने कदम रखे हैं। अनेक खेलों में विकलांग प्रशंसनीय पदक प्राप्त करते हैं। यह देखा जाता है कि व्यक्ति की ऊर्जा विकलांग क्षेत्र को उल्लंघन कर दूसरी ज्ञानान्दिय को सबल बना देती है। गुरु विरजानन्द जी जन्मान्ध होते हुये भी व्याकरण के सूर्य थे। इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध कवि मिलन, सन्त सूरदास को कौन नहीं जानता।

## प्रतियोगी परीक्षा या साक्षात्कार में सफल न होना

प्रतियोगी परीक्षाओं में मैरिट के आधार पर जितने प्रत्याशियों की आवश्यकता है उतने लोगों का चयन होता है। इसलिये किसी विषय में पीछे रह जाने पर निराश नहीं होना चाहिये। लाखों परीक्षार्थियों में से हजारों का या उससे भी कम चयन होता है। सब लोग जीनियस नहीं हो सकते। उन्हें दूसरे क्षेत्र में अपना

## निराशा - कारण एवं निवारण



..... कई बार ऐसा भी होता है जब आपका पक्ष न्यायोचित और जनहित के अनुकूल हो और आपकी बात को सही मानते हुये भी समझदार लोग उपेक्षा करते हैं तथा विरोधी पक्ष वाले विरोध करते हैं। आपने बहुत प्रयत्न एवं परिश्रम से कोई योजना बनाई है परन्तु उसे एक बार में ही अनुपयोगी बता दिया जाये तम समय आकोश तथा निराशा के भाव प्रकट होते हैं। इसमें अनेक कारण हैं। प्रभावशाली व्यक्ति आपसे सहमत इसलिये नहीं होते कि उनका अंह आड़े आने लगता है। वे सोचते हैं कि यह साधारण सा व्यक्ति हमारा मार्गदर्शन करने लगा तो हमें फिर कौन पूछेगा। कुछ लोगों को आपकी बात इसलिये सहन नहीं होती कि उनका स्वार्थ पूरा होने में आप बाधक बन जाते हैं। कुछों का काम ही विरोध करना है।....

भाग्य चमकाना चाहिये अथवा पहली परीक्षा से अनुभव प्राप्त कर अगले वर्ष के लिये कठोर परिश्रम करना चाहिये। साक्षात्कार में सफलता के लिये पूरी तैयारी, आत्मविश्वास और किसी विशेषज्ञ से सहायता ली जा सकती है।

## शारीरिक दुर्बलता

शारीरिक दुर्बलता भी अनेक बार निराशा की ओर धकेल देती है। साक्षात्कार के समय इसका अधिक ध्यान रखा जाता है। आजकल कम्पनियां अच्छा वेतन देती हैं परन्तु कार्य के घण्टे बढ़ा दिये जाते हैं। जो मजबूत कद काठी और दबंग प्रकृति का प्रभावशाली युवक है प्रायः उसको ही

प्राथमिकता दी जाती है। और भी कारण हो सकते हैं।

दुर्बलता को दूर करने के लिये युवावस्था के प्रारम्भ में ही ध्यान देने की आवश्यकता है। आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य से शरीर को धारण करने वाले तीन स्तम्भ हैं। व्यायाम इन तीनों को बल प्रदान करता है। इसलिये इन चारों बातों का ध्यान रखते हुये शरीर का निर्माण करने से निराशा कर भाव छूमन्तर हो जायेगा।

## हीनता की भावना

प्रतियोगिता में दूसरों से पीछे रह जाना, अन्य लोगों द्वारा होतोत्साहित किया जाना, अपनी कोई दुर्बलता, दुर्व्यसन आदि होने

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

पर व्यक्ति में हीन भावना आ जाती है और वह ऐसा सोचने लग जाता है कि मैं अमुक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसे समय में उसे किसी मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। जो उसकी प्रसुप्त क्षमताओं को जाग्रत कर सके। जीवन में उतार चढ़ाव आते ही रहते हैं। यदि कोई दुर्व्यसन-मध्यपान, नशा करना आदि है तो उसे तुरन्त छोड़ दें। लोग आपके विषय में क्या कहते हैं इसकी चिन्ता न करें।

जीवन में कुछ करना है तो,  
मन के मारे मत बैठो।  
आगे आगे बढ़ना है तो,  
हिम्मत हारे मत बैठो।।

**बड़े लक्ष्य का पूरा न होना**  
किसी भी युवक की महत्वकांक्षा कोई बड़ा कार्य करके दिखाने की होती है। लक्ष्य बड़ा बनाना गलत नहीं है परन्तु उसे क्रियान्वित करने के लिये मार्ग कितना लम्बा है। इसे पार करने में कितना समय लगेगा और कितने साधनों की आवश्यकता होगी इस पर भी पूरा विचार कर लेना चाहिये। कहा भी है  
धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।  
माली सींचे सो बड़ा ऋष्टु आये फल होय।।

- शेष पृष्ठ 7 पर

## Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

## Continue From Last issue

As a result of their untiring efforts, about one lakh Malkana Rajputs rejoined Hinduism. He worked for the regeneration of Hindu religion in several other ways. He condemned rigidity of caste system, idol worship and its evils, untouchability, degeneration due to non-observation of Brahmacharya and many other social evils prevailing in the Hindu society. He also created employment opportunities for the needy Hindus and other weaker sections of society.

His message to the youth of this country was to observe Brahmacharya. They were exhorted to keep pure in thought, word and deed and pay special attention to their health. They were also advised to pay their full attention to the acquisitions of knowledge and implement moral instructions imported to them in their life. Even after retirement as the Principal of the D.A.V. College, LAHORE, he kept contact with the youth of the college, took interest in their educational matters and kept them away from the influence of Christian missionaries.

Mahatma Hans Raj took great interest in the sphere of social service. He offered his willing and heartfelt sympathy and services at all times in all calamities, which included

..... He organized assistance to the orphans, widows and victims of religion intolerances and cruelty, wherever and whenever required. The miserable condition of the Hindu widows attracted the attention of Mahatma Ji. He supported remarriage of the widows and also lent his heartiest support in starting the widows ashram. While affording protection to the weaker sections of society. He raised the status of some so called untouchables, Mahatma Hans Raj was a stomach believer of the VEDAS which teach the brotherhood of mankind and promote love, service, purity and all other virtues which are necessary to uplift the whole humanity. .....

earthquakes, communal riots, famine, plague, floods and other adversities in the life of the poor and depressed people. He organized assistance to the orphans, widows and victims of religion intolerances and cruelty, wherever and whenever required. The miserable condition of the Hindu widows attracted the attention of Mahatma Ji. He supported remarriage of the widows and also lent his heartiest support in starting the widows ashram. While affording protection to the weaker sections of society. He raised the status of some so called untouchables, Mahatma Hans Raj was a stomach believer of the VEDAS which teach the brotherhood of mankind and promote love, service, purity and all other virtues which are necessary to uplift the whole humanity.

After his retirement from the college where he worked for 25 years in an honorary capacity, he gave his full attention to the noble work of VED prachar and

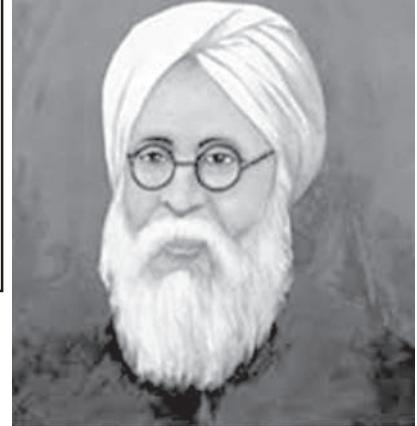
other activities of Arya Samaj. He travelled far and wide and went wherever the call of duty demanded. The work of VED prachar was a pure and prominent work for him and he made great and untiring efforts in this direction. He felt great pleasure in doing this work. However, this overwork and the advancing age put a great strain upon his health.

In the KUMBH MELA of 1938, Mahatma Hans Raj went to Hardwar accompanied by vedic preachers and singer. These they carried out preachings in the camps of pilgrims and on the banks of GANGA. An epidemic of cholera broke out during that time and Mahatmaji became a victim of this terrible disease. He became very weak and was taken to Solan district in Himachal Pradesh. He became well to some extent and returned to Lahore. But after sometime his health deteriorated further and he got seriously ill. He could not recover from his illness in spite

of best treatment available to that time. Consequently, he breathed his last on 15-11-1938 at 11 at night in the presence of his close companions and family members. The news of his death spread like wild fire. A very big procession, the like of which was never seen before, was taken out at Lahore and his body was cremated at the banks of river RA VI, with Vedic rites.

Mahatma Hans Raj was indeed a true Sanyasi a champion of Hindu widows, a great religious and social reformer, a great teacher and preacher of vedic principles and a stomach benefactor of Hindu society. Truly, he was a leading light and an outstanding leader of the ARYA SAMAJ.

With thanks By:  
"Makers of Arya Samaj"



## पृष्ठ 2 का शेष

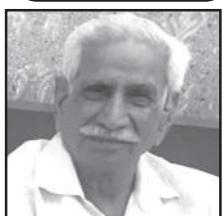
## घाटी को फिर से सुलगाने की ...

पंचायतों की बही खाते की देखरेख के लिए दो हजार से ज्यादा अकाउंटेंट की भर्ती प्रक्रिया शुरू की गई है। इसके अतिरिक्त पुल, सड़कें, शोपिंग मॉल बन रहे हैं। अलगावादियों की दुकानें बंद हो चुकी हैं तो इन लोगों को अब दुबारा अपनी राजनीति के लिए जमीन चाहिए और वो जमीन है आतंक और अनुच्छेद 370। क्योंकि इसी अनुच्छेद की आड़ में

ये लोग फिर से युवाओं को मजहबी घुट्टी पिलाकर उनके हाथों से कलम लेकर बारूद थमा देना चाहते हैं। इसलिए इनकी एकता का यह बेमेल घोषणापत्र राज्य के विकास के लिए नहीं बल्कि अपनी कट्टर मजहबी दुकानदारी का प्रमाण पत्र है। आतंक पर महबूबा का बयान अपनी राजनीतिक दुकान बंद होने का शोकपत्र है।

- सम्पादक

## शोक समाचार



## श्री ओम प्रकाश घई जी का निधन

आर्यसमाज डी ब्लॉक, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 के पूर्व प्रधान एवं वर्तमान कोषाध्यक्ष, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के संरक्षक एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सभा के विशेष आमन्त्रित सदस्य श्री ओमप्रकाश जी घई का 15 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 18 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न हुई।

## श्री हरिओम बंसल जी को मातृशोक

आर्यसमाज डिल्ली कोलोनी के प्रधान एवं आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के मन्त्री श्री हरिओम बंसल जी की पूज्य माताजी श्रीमती कान्तिदेवी बंसल आर्या जी का 14 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न हुई।

## श्री यशपाल आर्य जी को पितृशोक

आर्यसमाज हडसन लाइन किंग्जवे कैम्प से सम्बन्धित श्री यशपाल आर्य जी के पूज्य पिता श्री मुलखराज धींगड़ा जी का दिनांक 14 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 नवम्बर को वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक में सम्पन्न हुई।

## श्री राधेश्याम शर्मा जी का निधन

डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजमेंट कमेटी के महामन्त्री श्री राधेश्याम शर्मा जी का 16 नवम्बर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 17 नवम्बर को निगम बोधघाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 नवम्बर, 2020 को सम्पन्न हुई।

## श्री रामचन्द्र वर्मा जी का निधन

एटा निवासी, ऋषि दयानन्द के पथगामी, गुरुकुलों के हितैषी आर्य समाजी श्री राम चन्द्र वर्मा जी का 10 नवम्बर को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। राम चन्द्र वर्मा जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## श्री शीतला प्रसाद आर्य जी का निधन

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन के कर्मठ सदस्य एवं पूर्व अधिकारी श्री शीतला प्रसाद आर्य जी का दिनांक 9 नवम्बर, 2020 को 102 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

## श्री यशपाल आर्य जी का निधन

आर्यसमाज नाई की मंडी आगरा (उत्तर प्रदेश) के संरक्षक श्री यशपाल आर्य जी 'गुरुजी' का दिनांक 24 अक्टूबर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

## श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा जी का निधन

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 के सदस्य श्री श्याम सुन्दर अरोड़ा जी का दिनांक 11 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 13 नवम्बर, 2020 को आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सदगति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। - सम्पादक

## पृष्ठ 6 का शेष

जब एक बार लक्ष्य निर्धारित कर लिया तो उसी का चिन्तन करें। एक साथ अनेक कार्य करने से एक भी समय पर पूरा नहीं होता।

## अपराध बोध की भावना

जीवन पथ पर चलते हुये कहीं पर ठोकर लगने की भी सम्भावना रहती है। गलतियाँ किस से नहीं होती। कई बार घर वालों की डाट-फटकार, सामाजिक अपयोग और साथियों में उपहास के कारण व्यक्ति लज्जित होकर एकान्त में बैठ जाता है। यह खतरनाक स्थिति है। कोई भी अनहोनी घटना हो सकती है। ऐसे समय उसे आश्वासन और सहानुभूति की आवश्यकता होती है। हितैषियों का कर्तव्य है कि उसे धैर्य धारण करने और आगे से ऐसे गलत कार्य न करने का संकल्प

करायें। जो भूलों से शिक्षा लेकर पुनः सन्मार्ग पर चलने लगता है। लोग फिर उसे सम्मान देने लगते हैं। व्यक्ति स्वयं प्रायश्चित्त कर पुनः अच्छे कार्य में लग जाये तो अपराध बोध की भावना स्वयं ही समाप्त हो जायेगी।

अपना पक्ष सही होने पर भी जब उसका समर्थन नहीं मिले या लोग विरोध करने लगें।

कई बार ऐसा भी होता है जब आपका पक्ष न्यायोचित और जनहित के अनुकूल हो और आपकी बात को सही मानते हुये भी समझदार लोग उपेक्षा करते हैं तथा विरोधी पक्ष वाले विरोध करते हैं। आपने बहुत प्रयत्न एवं परिश्रम से कोई योजना बनाई है परन्तु उसे एक बार में ही अनुपयोगी बता दिया जाये उस समय आक्रोश तथा निराशा के भाव प्रकट होते हैं।

इसमें अनेक कारण हैं। प्रभावशाली व्यक्ति आपसे सहमत इसलिये नहीं होते कि उनका अहं आड़े आने लगता है। वे सोचते हैं कि यह साधारण सा व्यक्ति हमारा मार्गदर्शन करने लगा तो हमें फिर कौन पूछेगा। कुछ लोगों को आपकी बात इसलिये सहन नहीं होती कि उनका स्वार्थ पूरा होने में आप बाधक बन जाते हैं। कुछों का काम ही विरोध करना है।

यह कोई आवश्यक नहीं कि सभी लोग आप से सहमत हों। आपको धैर्य से अपनी बात को प्रस्तुत करना चाहिये। हो सकता है लोग जो कि विरोध कर रहे हैं वे जब शान्त मन से विचार करेंगे तो आपका पक्ष न्यायोचित है यह समझ में आ जायेगा। यदि फिर भी बात नहीं बनती है तो भी चिन्ता न करें। आपने अपनी बात कह दी। इसके समर्थन की अपेक्षा न की जाये तो अच्छा रहेगा। गीता कहती है कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

आप अपने पक्ष को मजबूती से जनता के सामने प्रस्तुत करते रहें और अपना निश्चय दोहरायें-

छल कपट मिटाना है जग से प्रभु हिम्मत दो हमको जो ठाने हम अपने मन में उसे पूरा कर दिखलाये। जग से भ्रष्टाचार मिटायें सक्षम कर दो जन को।।

## बोधन

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36+16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36+16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
स्थूलाक्षर संजिल्द 20x30+8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन	

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट Ph.: 011-43781191, 09650522778

427, मन्दिर बाली गली, नया बांस, दिल्ली-6 E-mail : aspt.india@gmail.com

## साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 नवम्बर, 2020 से रविवार 29 नवम्बर, 2020  
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020  
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26-27/11/2020 (गुरु-शुक्रवार)  
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020  
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 नवम्बर, 2020

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम	
प्रातः 5:00 जागरण मन्त्र	रात्रि 12:00 स्वामी देवब्रत प्रवचन
प्रातः 5:05 शरण प्रभु की आओ रे	रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
प्रातः 6:00 योग एवं स्वास्थ्य	रात्रि 1:00 विशेष
प्रातः 6:30 संध्या	रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (पुनः प्रसारण)
प्रातः 6:45 आओ ध्यान करें	रात्रि 3:00 आर्य मंच
प्रातः 7:00 दैनिक अग्निहोत्र	रात्रि 3:30 स्वामी देवब्रत प्रवचन
प्रातः 7:30 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)	प्रातः 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव नोट : विशेष स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - व्यवस्थापक
प्रातः 8:30 भजन बेला	
प्रातः 9:00 श्री राम कथा	
प्रातः 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव	
प्रातः 10:00 प्रवचन संग्रह	
प्रातः 10:30 नव तरंग	
प्रातः 11:00 प्रवचन माला	
प्रातः 11:30 योग एवं स्वास्थ्य	
अपराह्न 12:00 श्री राम कथा	
अपराह्न 12:30 स्वामी देवब्रत प्रवचन	
अपराह्न 1:00 विशेष	
अपराह्न 2:00 आर्य मंच	
अपराह्न 2:30 भजन सरिता	
अपराह्न 3:00 प्रवचन माला	
अपराह्न 3:30 नव तरंग	
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव	
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य	
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे	
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र	
सायं 6:30 संध्या	
सायं 6:45 आओ ध्यान करें	
सायं 7:00 स्वामी देवब्रत प्रवचन	
सायं 7:30 श्री राम कथा	
सायं 8:00 भजन सरिता	
सायं 8:30 भजन बेला	
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (पुनः प्रसारण)	
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र	
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव	
रात्रि 11:00 नव तरंग	
रात्रि 11:30 प्रवचन माला	

### निर्वाचन समाचार

#### आर्य समाज कालकाजी

नई दिल्ली-110019

प्रधान : श्री रामचन्द्र कपूर  
मंत्री : श्री राकेश भट्टनागर  
कोषाध्यक्ष : श्री प्रवीण रेलन

प्रतिष्ठा में,

### विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें।

एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं - <https://bit.ly/2OWyt2x>  
वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।



## जानिये एम डी एच देवी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की

### सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती है। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देवी मिर्च तैयार होती है।



क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ? लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।

आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

**M D H मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच – सच**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायण औद्योगिक क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : [aryasabha@yahoo.com](mailto:aryasabha@yahoo.com); Web : [www.thearyasamaj.org](http://www.thearyasamaj.org) से प्रकाशित सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भट्टनागर, एस. पी. सिंह